The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 7 | July 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

जनजातीय महिलाओं तथा बच्चों में कुपोषण की समस्या का अध्ययनः कोरबा जिले के दोंदरो एवं बेलाकछार क्षेत्र के संदर्भ में

1. डॉ. विमला सिंह
सहायक प्राध्यापक(समाजषास्त्र)
कमला नेहरू महाविद्यालय,कोरबा (छ.ग.)

2. डॉ, सर्वेश कुमार सिंह
अतिथि प्राध्यापक (राज, विज्ञान)
शा, इ, वि, स्नातको, महा, कोरबा

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

कुपोषण, जनजातीय समुदाय, आदिवासियों

ABSTRACT

जनजाति भारतीय समाज का एक ऐसा अंग है जो उपयुक्त समस्याओं के साथ –साथ जीवन यापन करता है। सामुदायिक परिवेष में विभिन्न बहुआयामी सामाजिक, सांस्कृतिकएवं आर्थिक समस्यायें निहित है परन्तु इनमें सबसे विषिष्ट समस्या जनजाति महिला और बच्चों के जीवन से संयुक्त स्वास्थ्य समस्या है और इस संदर्भ में यह स्पष्ट है कि स्वास्थ्य की समस्या उत्पादन क्षमता के विकास के अभाव तथा कार्य की षोषणयुक्त व्यवस्था से संबंधित है।

जनजातीय समुदाय में परम्परागत संबंध और आदान–प्रदान पर आधारित श्रम–व्यवस्था देखी जा सकती है। आदिवासी परिवारों में जीवन का मुख्य आधार श्रम और उससे प्राप्त की गई पूंजी है, इसमें महिलायें भी कठार श्रम कार्य करते हैं, जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है। आदिवासियों का एक बहुत बड़ा समूह आज भी अभावग्रस्त जीवन व्यतीत कर रहा है क्योंकि कुपोषण नियंत्रण संबंधी षासकीय व अषासकीय प्रयास से अन्य विकास की योजनाएं इनका लाभ आदिवासी वर्ग के कुछ गिने–चुने लोग ही ले पा रहे हैं। इनका बहुत बड़ा समूह आज भी कुपोषण, गरीबी, निरक्षरता, बीमारी, अषिक्षा,

बेरोजगारी व भूखमरी से ग्रस्त हैं तथा षिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाएं भी अधिकांष जनजातियों को नहीं मिल पा रही हैं।

परिचय –

छत्तीसगढ़ राज्य में नक्सल समस्या को सबसे बड़ी समस्या मानी जाती है, क्योंकि इससे विकास की रफ्तार धीमी हो रही है। इसके बाद दूसरी सबसे बड़ी समस्या कुपोषण को माना जाता है, इसमें राज्य के लाखों बच्चे व महिलाएं प्रभावित हैं विषेषकर जनजातीय क्षेत्रों के। वहीं कुपोषण को दूर करने के लिए राज्य सरकार मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान चला रही है। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा वजन त्यौहार अगस्त 2022 के आंकड़े के अनुसार राज्य में इस साल 17.76 फीसदी बच्चे कुपोषित पाये गये। इसमें राज्य के 33 जिलों के 23 लाख 79 हजार 29 बच्चों का वजन लिया गया। इनमें 19 लाख 56 हजार 616 बच्चे सामान्य पाए गए, जबकि 04 लाख 22 हजार 413 बच्चों में कुपोषण की स्थिति देखी गई। इनमें 86 हजार 751 बच्चे गंभीर कुपोषण और 3 लाख 35 हजार 662 बच्चे मध्यम कुपोषित मिले।

किसी भी देष के विकास को मापने में वहाँ निवासरत लोगों के स्वास्थ्य की स्थित एक महत्वपूर्ण सूचक माना जाता है। सृजन और जीवन चक्र के बीच की धुरी है महिलायें। केवल संतति नहीं, एक सेहतमंद समाज की वाहक भी हैं वे। ऐसे में उनके खुद का बदहाल स्वास्थ्य हताषा और कुंठा पैदा करता है, सुदूर वन आच्छादित क्षेत्रों की जनजातीय महिलायें एवं बच्चों को आज भी स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी सुविधाओं से कोसों दूर हैं। ''किसी भी समाज का मूल्यांकन इस बात से किया जाता है कि उसमें महिलाओं एवं बच्चों की स्थिति कैसी है?''ये विचार डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के हैं। संविधान निर्माताओं ने निष्चित ही आधी आबादी के स्वास्थ्य को विमर्ष के केन्द्र में रखा। जनजातीय महिलाएं अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं हो पाती हैं, जिस कारण आज भी ये जनजातीय महिलाओं में कुपोषण, एनीमिया, मातृ मृत्युदर स्वास्थ्य समस्याएँ विद्यमान है। जब तक इन जनजातीय महिलाओं व बच्चों का स्वास्थ्य स्थिति में सुधार नहीं हो जाता तब तक देष, समाज एवं परिवार का विकास असम्भव है। इन महिलाओं व बच्चों में स्वास्थ्य के महत्व को बढ़ाने और सुधार

करने के लिए देषव्यापी राष्ट्रीय प्रचार और जागरूकता कार्यक्रम अति आवष्यक है। स्वस्थ महिला ही स्वस्थ देष का निर्माण कर पायेगी।

अध्ययन का उद्येष्य –

1. जनजातीय महिलाओं व बच्चों में कुपोषण की जानकारी प्राप्त करना।
2. जनजातीयों महिलाओं व बच्चों में कुपोषण के प्रमुख कारणों की जानकारी प्राप्त करना।
3. आंगन बाड़ी केन्द्रों से मिलने वाली विविध सुविधाओं की जानकारी प्राप्त करना ।
4. कुपोषण नियंत्रण की दिषा में महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम के प्रयासों की जानकारी प्राप्त करना।
5. कार्यक्रम हेतु रचनात्मक सुझाव प्राप्त करना।

शोध पद्धति –

प्रस्तुत अध्ययन में बालको नगर के जनजातीय ग्रामीण क्षेत्र दोंदरो, बेला, बेलाकछार के जानकारी में महिलाओं एवं बच्चों के कुपोषण की स्थिति का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की विषालता एवं इकाईयों की अधिकता एवं समय की कमी को देखते हुए 50 उत्तरदाताओं (जनजातीय महिलाओं) का चुनाव उद्येष्यपूर्ण निदर्षन के द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के समुचित संकलन एवं वैज्ञानिक अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है तथा अध्ययन क्षेत्र में संबंधित तथ्यों की प्राप्ति अवलोकन के माध्यम से की गई है।

अध्ययन का महत्व –

1. जनजातीय महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण के वास्तविक कारणों की जानकारी प्राप्त करना।
2. जनजातीय महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण नियंत्रण के प्रति नवीन तथ्यों एवं प्राचीन दृष्टिकोणों का पता लगाना।
3. कुपोषण नियंत्रण की दिषा में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित कार्यक्रम के प्रभावों
   की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
4. यह अध्ययन स्वास्थ्य षिक्षा के क्षेत्र में नवीन ज्ञान प्रदान करेगा।

5. इस अध्ययन द्वारा महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम की लोकप्रियता का पता चल सकेगा। जिससे यह अध्ययन आने वाले समय में दिषा निर्देष का कार्य कर पायेगा।

जनजातीय महिलाओं व बच्चों में कुपोषण –

जनजातीय महिला और बच्चों को उसकी षारीरिक आवष्यकताओं के अनुकूल उपयुक्त मात्रा में सभी भोज्य तत्व नहीं मिलते जिनके कारण षरीर की वृद्धि और विकास तथा उसकी क्रियाषीलता पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

तालिका क्रमांक – 01

उत्तरदाता के परिवार में कुपोषण की समस्या है या नहीं

क्रमांक	समस्या	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	26	52%
2.	नहीं	24	48%
	कुलयोग	50	100%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 52%उत्तरदाताओं के परिवार में कुपोषण की समस्या हैक्योंकि ये अपने भोजन में संतुलित आहार का सेवन नही कर पाते हैं तथा 48%उत्तरदाताओं के परिवार में कुपोषण की कोई समस्या नहीं है।

कुपोषण के कारण – कुपोषण एक अत्यंत गंभीर व हानिकारक समस्या है। इसका समय पर नियंत्रण न होने से गंभीर समस्या उत्पन्न हो जायेगी, कुपोषण का प्रत्यक्ष प्रभाव गरीब व जनजातीय समुदाय विषेषकर महिलाओं एवं छोटे बच्चों पर सबसे अधिक पड़ता है।

तालिका क्रमांक – 02

कुपोषण के कारण

क्रमांक	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	गरीबी	11	22%

2.	जानकारी का अभाव	05	10%
3.	कम उम्र में विवाह	04	08%
4.	कम उम्र में मां बनना	06	12%
5.	जन्म के तुरन्त बाद स्तनपान न करना	08	16%
6.	नशा	09	18%
7.	बुनियादि स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव	07	14%
	कुल योग	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जातीय समाज में कुपोषण के कारणों में 22%उत्तरदाताकुपोषण का कारण गरीबी को मानते है क्योंकि जो जंगल के राजा माने जाते थे। संविधान निर्माण के बाद से उनके अधिकारों को समाप्त कर दिया गया है जैसे – लकड़ियों को काटना, झूम कृषि पर रोक, जंगली जानवारों के षिकार पर रोक आदि मानते हैं। 18%उत्तरदाताओं कुपोषण का कारण नषा को मानते हैं,16%उत्तरदाता जन्म के तुरन्त बाद स्तनपान न करना,14%उत्तरदाता बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव को मानते हैं,12%उत्तरदाताकम उम्र में माँ बनना व गर्भावस्था में समय में उचित देखभाल न होना मानते हैं, 10% उत्तरदाता जानकारी का अभाव का होना, 8% उत्तरदाता कम उम्र में विवाह हो जाना को मानते हैं।

आंगनबाड़ी केन्द्र से प्राप्त भोज्य पदार्थ –

आंगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से बच्चों तथा गर्भवती व षिषुवती महिलाओं को पूरक पोषण आहार प्रदान किया जाता है। ताकि उनके पोषण आहार में वृद्धि हो एवं उन्हें कुपोषण से मुक्त रखा जा सके।

तालिका क्रमांक –03

आंगनबाड़ी केन्द्र से प्राप्त भोज्य पदार्थ

क्रमांक	भोज्य पदार्थ	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	चना, मुर्रा, गुड़	07	14%
2.	मूंगफली एवं गुड़	06	12%
3.	रेडी टू ईट फूड	15	30%
4.	उबला/भीगा चना, गुड़,नमक	08	16%
5.	उबला अण्डा	05	10%
6.	चावल,दाल, हरी सब्जियाँ (पका हुआ)	09	18%
	कुल योग	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक रेडी–टू–ईट–फूड30%उत्तरदाताओं को प्राप्त होता है। 18% उत्तरदाताओं को चाँवल, दाल, हरी सब्जियाँ पका हुआ खिलाया जाता है, 16%उत्तरदाताओं को उबला/भीगा चना, गुड़, नमक 14%उत्तरदाताओं को चना, मुर्रा, गुड़ 12%उत्तरदाताओं को मूंगफली एवं गुड़, 10%उत्तरदाताओं को उबला अण्डा प्राप्त होता है,इतना सब मिलने के बाद कुपोषणकीसमस्या क्यों ? उत्तरदाताओं ने बताया कि सही समय पर व रोज प्राप्त नहीं होता है।

महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम प्रभाव –

महिला जागृति षिविर आयोजित करने का मुख्य उद्येष्य महिला एवं बाल विकास विभाग में संचालित योजनाओं की जानकारी देना है साथ ही राज्य षासन की अन्य योजनाओं की जानकारी भी दी जाती है। इस षिविर में महिलाओं को कानूनी अधिकारों, सामाजिक समस्याओं तथा उनकी आर्थिक विकास की जानकारी के साथ उत्पन्न समस्याओं के निराकरण के स्त्रोतों की जानकारी दी जाती है। ताकि महिलाओं की उन्नति के अवसरों एवं अपने अधिकारों की जानकारी पूर्ण–रूपेण मिल सके एवं उनमें जागृति आ सके।

तालिका क्रमांक –4

कुपोषण नियंत्रण में महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम का प्रभाव

क्रमांक	प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सामान्य	11	22%
2.	अच्छा	24	48%
3.	बहुत अच्छा	10	20%
4.	खराब	05	10%
	कुल योग	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 48%उत्तरदाता कुपोषण नियंत्रण में महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम का प्रभाव को अच्छा मानते हैं क्योंकि इनके द्वारा सरकार की हर मदद देने की कोषिष की जाती है। 22%उत्तरदाता का मानना है कि सामान्य है, 20%उत्तरदाताओं की मानना है कि बहुत अच्छा है जबकि 10%उत्तरदातामहिला एवं बाल विकास कार्यक्रम से संतुष्ट नहीं है इनका मानना है कि और बेहतर किया जा सकता है।

सुझाव –जनजातीय महिलाओं तथा बच्चों के कुपोषण नियंत्रण में आंगनबाड़ी तथा महिला एवं बाल विकास विभाग का महत्वपर्ण योगदान है। कुपोषण की समस्या एक गंभीर समस्या है। कुपोषण न सिर्फ परिवार व समाज को प्रभावित करता है, अपितु यह देष के विकास पर भी ग्रहण है। कुपोषण को नियंत्रण करने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गये हैं–

1. महिला एवं बाल विकास विभाग के समस्त कर्मियों द्वारा पूरी निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करें।
2. महिला एवं बाल विकास विभाग से समन्वय आंगनबाड़ी स्थापित कर इन सभी कार्यक्रमों को सफल बनायें।
3. गाँव से लेकर षहर के सामान्य व दुर्गम क्षेत्रों में आंगनबाड़ी का संचालन करना।

4. कार्ययोजना व कार्यकुषलता का समय–समय पर परीक्षण करना।
5. आंगनबाड़ी केन्दों की गुणवत्ता में वृद्धि करना।
6. विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने के लिए स्वयंसेवी संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाना चाहिए।
7. आंगनबाड़ी केन्द्रों में महिलाओं तथा बच्चों के स्वास्थ्य षिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।
8. प्रसव तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में सहयोग के लिए आंगनबाड़ी कार्यकताओं को प्रोत्साहन राषि मिलनी चाहिए।

संदर्भसूची –

1. गुप्ता एम.एल. एवं षर्मा डी.डी., जनजातीय समाज का समाजषास्त्र, पृ. 51–70
2. दीक्षित ध्रुव कुमार, ग्रामीण एवं नगरीय समाजषास्त्र एवं जनजातीय समाज का समाजषास्त्र, पृ. 72–80
3. मुखर्जी रविन्द्रनाथ सामाजिक षोध एवं सांख्यिकीय पृ.112 –131
4- महिला एवं बाल विकास विभाग – त्रैमासिक पत्रिका अंगना के गोठ, पृ. 02 –35
5- गोयल सुनील एवं गोयल संगीता, समाजषास्त्र, पृ. 10 –19.